

## स्नेकबाइट की रोकथाम और नियंत्रण

### प्रलिस के लिये:

[स्नेकबाइट वषि](#), स्नेकबाइट की रोकथाम और नियंत्रण के लिये राष्ट्रीय कार्य योजना (NAP-SE), ['वन हेल्थ' दृष्टिकोण](#), [वशिव स्वास्थय संगठन](#), [उपेक्षति उषणकटबिधीय रोग](#)

### मेन्स के लिये:

स्नेकबाइट वषि, 'वन हेल्थ' दृष्टिकोण

[स्रोत: पी.आई.बी.](#)

## चर्चा में क्यों?

हाल ही में स्वास्थय एवं परिवार कल्याण मंत्रालय ने ['वन हेल्थ' दृष्टिकोण](#) के तहत [स्नेकबाइट](#) की रोकथाम और नियंत्रण के लिये एक राष्ट्रीय कार्य योजना (NAP-SE) का शुभारंभ किया।

## स्नेकबाइट की रोकथाम और नियंत्रण के लिये राष्ट्रीय कार्य योजना (NAP-SE) क्या है?

### परचिय:

- NAP-SE भारत में साँप के काटने के ज़हर के प्रबंधन, रोकथाम और नियंत्रण के लिये एक व्यापक रूपरेखा प्रदान करती है।।
- यह NAP-SE स्नेकबाइट के कारण होने वाली मौतों की संख्या को आधा करने की वैश्विक मांग को साझा करता है और और संबंधित हतिधारकों के सभी रणनीतिक घटकों, भूमिकाओं और जमिंदारियों की परकिलपना करता है।
- NAP-SE राज्यों/केंद्रशासित प्रदेशों और हतिधारकों के लिये उनकी आवश्यकताओं के अनुरूप अपनी कार्य योजना विकसित करने के लिये एक मार्गदर्शन दस्तावेज़ है और इसका उद्देश्य एंटी-स्नेक वेनम की नरितर उपलब्धता, क्षमता नरिमाण, रेफरल तंत्र और लोक शकिषा के माध्यम से स्नेकबाइट के खतरे को व्यवस्थित रूप से कम करना है।

### लक्ष्य:

- वर्ष 2030 तक स्नेकबाइट से होने वाली मौतों और दवियांगता के मामलों की संख्या को आधा करने के लिये इसे रोकना और नियंत्रित करना।
- साँप के काटने से मनुष्यों में होने वाली रुग्णता, मृत्यु दर और उससे संबंधी जटलिताओं को धीरे-धीरे कम करना।

### रणनीतिक कार्रवाइयाँ:

- मानव स्वास्थय: मानव स्वास्थय घटक के लिये रणनीतिक कार्रवाई में सभी स्वास्थय सुवधियों पर साँप के जहर रोधी प्रावधान सुनिश्चित करना, मनुष्यों में स्नेकबाइट के मामलों एवं इससे होने वाली मौतों की नगिरानी को मज़बूत करना शामिल है।
  - ज़िला अस्पतालों अथवा CHC में एम्बुलेंस सेवाओं, कषेत्रीय वषि केंद्रों के संस्थागतकरण तथा अंतर-कषेत्रीय समन्वय सहित आपातकालीन देखभाल सेवाओं को मज़बूत करना शामिल है।
- वन्यजीव स्वास्थय: वन्यजीव स्वास्थय घटक के लिये रणनीतिक कार्रवाई में शकिषा जागरूकता, वषिरोधी वतिरण, प्रमुख हतिधारकों को मज़बूत करना, व्यवस्थित अनुसंधान एवं नगिरानी तथा साँप के जहर का संग्रहण के साथ-साथ साँपों को स्थानांतरित करना शामिल है।
- पशु एवं कृषिघटक: पशु और कृषिघटक के लिये रणनीतिक कार्रवाई में पशुधन में स्नेकबाइट की रोकथाम, सामुदायिक सहभागिता आदि शामिल हैं।

## स्नेकबाइट एनवेनोमगि (SE) क्या है ?

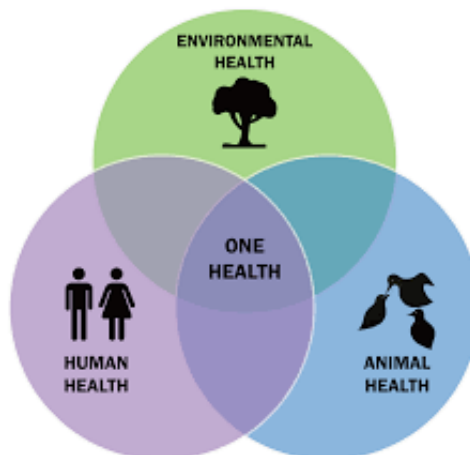
### परचिय:

- [वशिव स्वास्थय संगठन \(WHO\)](#) द्वारा स्नेकबाइट एनवेनोमगि (SE) को उच्च प्राथमिकता वाले [उपेक्षति उषणकटबिधीय रोग \(NTD\)](#) के रूप में वर्गीकृत किया गया है।

- SE एक संभावित जीवन-घातक बीमारी है जो आमतौर पर एक जहरीले साँप के काटने के बाद वभिन्नवर्षाकृत पदार्थों (जहर) के मशिरण के इंजेक्शन के परिणामस्वरूप होती है।
- यह साँपों की कुछ प्रजातियों द्वारा आँखों में जहर छड़िकने के कारण भी हो सकता है, जिनमें बचाव के उपाय के रूप में जहर उगलने की कषमता होती है।
- कई लाखों लोग ग्रामीण एवं उपनगरीय क्षेत्रों में रहते हैं जो अपने अस्तित्व के लिये कृषि एवं नरिवाह खेती पर नरिभर हैं, जसिसे अफ्रीका, मध्य-पूर्व, एशिया, ओशानिया और लैटिन अमेरिका के ग्रामीण उषणकटबिंधीय तथा उपोषणकटबिंधीय क्षेत्रों में स्नेकबाइट एक गंभीर दैनिक स्वास्थय जोखमि बन गया है।
- **प्रभाव:**
  - कई स्नेकबाइट पीड़ति, वशिषकर वकिसशील देशों में वकृति, अवकुंचन, वचिछेदन, दृश्य दोष, गुरदे की जटलिता तथा मनोवैज्जानिक संकट जैसी दीर्घकालिक व्याधियों से पीड़ति होते हैं।
- **व्यापकता:**
  - भारत में प्रतविरष अनुमानति 3-4 मिलियन स्नेकबाइट से लगभग 50,000 मौतें होती हैं, जो वैश्विक स्तर पर स्नेकबाइट से होने वाली सभी मौतों का आधा हसिसा है।
    - वभिन्न देशों में स्नेकबाइट से पीड़ति लोगों का केवल एक छोटा सा हसिसा ही क्लीनिकों और अस्पतालों में रपिरट करता है और स्नेकबाइट का वास्तविक बोझ बहुत कम बताया जाता है।
  - केंद्रीय स्वास्थय जाँच ब्यूरो (Central Bureau of Health Investigation - CBHI) की रपिरट (2016-2020) के अनुसार, भारत में स्नेकबाइट के मामलों की औसत वार्षिक संख्या लगभग 3 लाख है और लगभग 2000 मौतें स्नेकबाइट के कारण होती हैं।
  - भारत में लगभग 90% स्नेकबाइट सर्पों की चार बड़ी प्रजातियों-कॉमन करेट/करैत, इंडयिन कोबरा, रसेल वाइपर और सॉ स्केल्ड वाइपर के कारण होते हैं।
- **SE की रोकथाम के लिये WHO का रोडमैप:**
  - WHO ने वर्ष 2030 तक स्नेकबाइट से होने वाली मृत्यु तथा दवियांगता के मामलों को आधा करने के लक्ष्य के साथ वर्ष 2019 में अपना रोडमैप लॉन्च कया था।
    - एंटीवेनम के लिये एक स्थायी बाज़ार वकिसति करने हेतु वर्ष 2030 तक सक्षम नरिमाताओं की संख्या में 25% की वृद्धि की आवश्यकता है।
    - WHO ने वैश्विक एंटीवेनम भंडार बनाने के लिये एक पायलट परयोजना तैयार की है।
    - प्रभावित देशों में स्नेकबाइट के उपचार तथा प्रतक्रिया को राष्ट्रीय स्वास्थय योजनाओं में एकीकृत करना, जसिमें स्वास्थय कर्मियों का बेहतर प्रशिक्षण एवं समुदायों को शक्ति करना शामिल है।
- **भारतीय पहल:**
  - WHO रोडमैप लॉन्च होने से बहुत पहले, भारतीय चकितिसा अनुसंधान परिषद् (ICMR) के शोधकर्त्ताओं ने वर्ष 2013 से सामुदायिक जागरूकता और स्वास्थय प्रणाली कषमता नरिमाण शुरू कर दया था।
  - WHO की स्नेकबाइट वषि नविवारण रणनीति और आपदा जोखमि न्युनीकरण के लिये संयुक्त राष्ट्र के सेंटाई फ्रेमवर्क के अनुरूप, भारत ने इस मुद्दे से नपिटने के लिये वर्ष 2015 में एक राष्ट्रीय कार्य योजना की पुष्टि की।

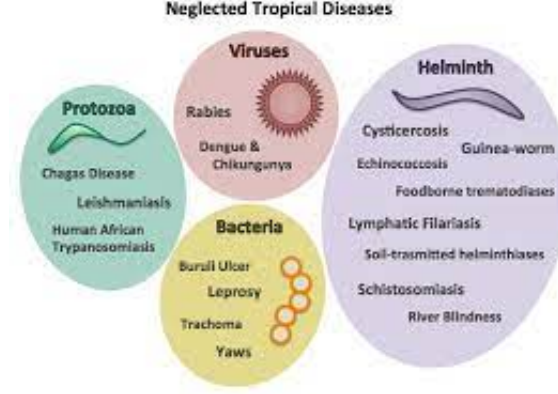
## वन हेल्थ दृष्टिकोण क्या है?

- वन हेल्थ एक ऐसा दृष्टिकोण है, जो यह मानता है, किलोगों का स्वास्थय जानवरों के स्वास्थय और हमारे साझा पर्यावरण से नकिटता से जुड़ा हुआ है।
- वन हेल्थ का दृष्टिकोण संयुक्त राष्ट्र के खाद्य और कृषि संगठन (FAO), वशि्व पशु स्वास्थय संगठन (OIE) सहति त्रपिकषीय-प्लस गठबंधन के बीच समझौते से अपना दृष्टिकोण प्राप्त करता है।
- इसका उद्देश्य मानव स्वास्थय, पशु स्वास्थय, पौधे, मृदा, पर्यावरण और पारस्थितिकी तंत्र स्वास्थय जैसे वभिन्न वषियों में कई स्तरों पर अनुसंधान और ज्जान साझा करने में सहयोग को प्रोत्साहति करना है, जसिसे सभी प्रजातियों के स्वास्थय में सुधार, सुरक्षा और बचाव हो सके।



## उपेक्षित उष्णकटिबंधीय रोग (NTDs) क्या हैं?

- NTDs संक्रमणों का एक समूह है, जो अफ्रीका, एशिया और अमेरिका के विकासशील क्षेत्रों में रहने वाले वंचित समुदायों में सबसे सामान्य है।
- वे विभिन्न प्रकार के रोगजनकों जैसे वायरस, बैक्टीरिया, प्रोटोजोआ और परजीवी कीट के कारण होते हैं।
- NTD विशेष रूप से उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में आम हैं, जहाँ लोगों के पास स्वच्छ जल या मानव अपशिष्ट के नपिटान केसुरक्षित तरीके तक पहुँच नहीं है।
- **तपेदक**, **HIV-AIDS** और **मलेरिया** जैसी बीमारियों की तुलना में इन बीमारियों पर आमतौर पर अनुसंधान और उपचार के लिये कम धन मलित है।
  - NTDs के उदाहरण: स्नेकबाइट, खुजली, टरेकोमा, लीशमैनियासिस और चगास रोग आदी।



और पढ़ें: [सर्प वषि को नषिकरयि करने वाली एंटीबाँडी](#)

## UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न

प्रश्न. नमिनलखिति में से कौन भारत में माइक्रोबयिल रोगजनकों में बहु-दवा प्रतशिध की घटना के कारण हैं? (2019)

1. कुछ लोगों की आनुवंशिकि प्रवृत्ति
2. बीमारियों को ठीक करने के लिये एंटीबायोडकि दवाओं की गलत खुराक लेना
3. पशुपालन में एंटीबायोडकि का प्रयोग
4. कुछ लोगों में कई पुरानी बीमारियाँ

नीचे दयि गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनयि।

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 2 और 3
- (c) केवल 1, 3 और 4
- (d) केवल 2, 3 और 4

उत्तर: (b)

प्रश्न: क्या डॉक्टर के नरिदेश के बनिा एंटीबायोडकि दवाओं का अतप्रयोग और मुफ्त उपलब्धता भारत में दवा प्रतशिधी रोगों के उद्भव में योगदान कर सकते हैं? नगिरानी एवं नयित्रण के लिये उपलब्ध तंत्र क्या हैं? इसमें शामिल विभिन्न मुद्दों पर आलोचनात्मक चर्चा कीजयि। (2014)